JALANDHAR CITY
17 MAY 2017
CENTRE

[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
# आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 74 अंक :7
सृष्टि संवत् 1960853118
14 मई, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 7, 11–14 मई 2017 तदनुसार 1 ज्येष्ठ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

# जो तुझे चाहते हैं, वे ही तृप्त होते हैं

*–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ*

**ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मर्ता अमृत मो ते अंह आरन्।**
**वावन्धि यज्यूँरुत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम।।**

–ऋ० ५।३२।१३

**शब्दार्थ**–हे **अमृत** = जीवनाधार प्रभो ! **ये** = जो **चाकनन्त** = तुझे चाहते हैं **ते मर्ता** = वे मनुष्य **नू** = ही **चाकनन्त** = सदा तृप्त होते हैं। **ते** = वे **अंह :** = दोष को **मो** = मत **आरन्** = प्राप्त हों। तू ऐसे **यज्यून्** = याज्ञिकों को, भक्तों को, **वावन्धि** = चाह, सम्मानित कर। **उत** = और **तेषु** = उन **जनेषु** = जनों में **ओजः** = ओज, शक्ति **धेहि** = दे, डाल, **येषु**= जिनमें [सम्मिलित होकर] हम **ते** = तेरे **स्याम** = हों, हो जाएँ।

**व्याख्या**–दीनबन्धो करुणासिन्धो ! संसार के समस्त पदार्थ देख लिये। किसी में नितान्त और स्थिर रस नहीं है। मुझे तेरे प्यारों ने बताया है, **रसं ह्योवायं लब्धवानन्दी भवति** [तै० २।७]–मनुष्य रस प्राप्त करके आनन्दमग्न हो जाता है। वह रस मैं कहाँ पाऊँ ? उन्हीं तेरे प्यारों ने बताया–**रसो वै सः** [तै० २।७] वह परमात्मा ही रस है। प्राण से प्यारे, प्राण के भी प्राण ! तू रस और मैं नीरस ! यह क्या बात है ? मुझे रस चाहिए रस। क्या कहते हो ? **'ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते'** जो चाहते हैं, वे ही तृप्त होते हैं। तो क्या मेरे अन्दर चाह नहीं ? नहीं। क्योंकि–**'ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते'** जो चाहते हैं वे ही चाहते हैं। मैं चाह तो रहा हूँ, किन्तु संसार को। कृपा करके संसार की चाह मिटा। प्रभो ! **'चाह गई, चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह।'** संसार की सब कामना समाप्त कर दी है। नहीं ! तूने मन को बेपरवाह कर दिया है। मन को मेरी चाह में लगा और फिर रस पा।

प्रभो ! अच्छा ! मेरी एक विनय सुन–**'मो ते अंह आरन्'** वे तेरे अभिलाषी पाप को प्राप्त न हों। पाप का फल दुःख होता है। प्रभो ! उनके दुःखमूल का उन्मूलन कर। प्रभो ! और भी–**'वावन्धि यज्यून्'** ऐसे भक्तों को बाँध रख, तू भी इनको चाह। वे तेरा संग न छोड़ें। तेरे मार्ग से न बिदकें। तू भी उन्हें चाह। तेरे प्रेम से बँधे वे पाप से बचे रहेंगे। अन्त में प्रभो ! एक स्वार्थ भी–**'तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम'** = शक्ति उनको देना, जिनमें जाकर हम तेरे हो जाएँ। अमृत ! जीवनाधार ! मेरी कामना है कि मैं तेरा बन जाऊँ, तुझे ही ध्याऊँ, तेरा ही यश गाऊँ, अतः प्रभो ! उनको अवश्य बल दे, जो मुझे तेरा बना दें। तेरा तो व्रत ही है शरणागत की लाज रखना।

**यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह।**
**अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः।।**

–ऋ० ५।३४।३

**शब्दार्थ**–**यः** = जो मनुष्य **अस्मै** = इस आत्मा के लिए **घ्रंसे** = दिन में **सोमम्** = सोम को **सुनोति** = कूटता है, तैयार करता है **उत वा** = अथवा **यः** = जो **ऊधनि** = रात्रि में, सोम निष्पादन करता है, वह **द्युमान्** +**अह** = तेजस्वी ही **भवति** = होता है। **यः** = जो **शक्रः** = समर्थ **मघवा** = धनवान् **कवासखः** = ज्ञानी मित्रोंवाला **ततनुष्टिम्** = विस्तार को और **तनूशुभ्रम्** = शरीर की शुद्धि को **ऊहति** = विचारता है, वह **आप** + **आप** = दुःख से अत्यन्त दूर रहता है।

अथवा **यः** = जो **मघवा** = धनवान तथा **कवासखः** = ज्ञानियों का मित्र है, वह **शक्रः** = शक्तिशाली **ततनुष्टिम्** = विस्तार को तथा **तनूशुभ्रम्** = शरीर–शुद्धि–मात्र को **अप+अप+ऊहति** = उत्यन्त बुरा मानता है।

**व्याख्या**–इस मन्त्र में दिन–रात सोम–निष्पादन करने का बहुत बहुत माहात्म्य दिखाया है। जो दिन–रात **'सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह'** = सोम–सम्पादन करता है, वह तेजस्वी होता ही है। आत्मा के लिए जो दिन–रात शान्ति के उपाय करने में लगा रहता है, वह तेजस्वी अवश्य होता है। अशान्त मन चञ्चल होता है। चञ्चल होने के कारण उसकी शक्ति बिखरी रहती है, किसी एक केन्द्र पर केन्द्रित करने में सफल हो जाता है, तब उसका मुख सुदीप्त होने लगता है। वायुसमान निरन्तर चञ्चल मन को वश में करने के लिए थोड़ा बल नहीं चाहिए, वरन् बहुत बल चाहिए। ऐसे महाबल को वेद की परिभाषा में 'शक्र' कहते हैं। सोमपान करने से आत्मा शरीर की चिन्ता और संसार–व्यापार से ऊब जाता है। अतः–**'अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रम्'** = शक्र संसार–विस्तार के तथा शरीरशुद्धिमात्र के विचार को दूर–बहुत दूर–भगा देता है।

प्रातःकाल स्नान करता है, मल–मलकर देह को माँजता है, धोता है, किन्तु थोड़ी देर बाद फिर देह मलिन प्रतीत होने लगती है। देह की इस मलिनता को देखकर वह शरीर शुद्धिमात्र को तुच्छ समझता है। बिज्जू नाम का पशु अपना स्थान अत्यन्त स्वच्छ रखता है, इतना कि यदि उसके भठ के पास मलमूत्र फेंक दिया जाए, तो वह स्थान छोड़ देता है। बाहर से इतना स्वच्छ रहने वाला बिज्जू खाता है मुरदे। बताओ, बाहर की सफाई से क्या बना ? अतः केवल शरीरशुद्धि ऐसे ज्ञानी के जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। उसके जीवन का लक्ष्य बहुत ऊँचा होता है। दिन–रात सोमसम्पादन करने का फल द्युमान् = तेजस्वी होना बतलाया है। शरीरशुद्धिमात्र से तेज नहीं आता। सोमपान से तेज आता है, जैसा कि वेद [ऋ० ८।४८।३] में कहा–**'अपाम सोमममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान्'** = हमने सोमपान किया और हम अमृत हो गये, प्रकाश मिला और मिले दिव्य गुण। प्रकाश के बिना तेज कहाँ ? सोमपान से जीवन्मुक्ति मिलती है। मुक्ति का अभिलाषी तो काया को बह्वपाय मानता है, वह उसकी चिन्ता में क्यों रहेगा?

**(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

# दयामय ! प्रभु आप मेरे बने रहो

ले. -डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलाभाष ०९३५४८४५४२६

भक्त भगवान् से प्रार्थना करता है कि हे प्रभो ! आप दाता हो। आप की दया को पाने के लिए हम सदा तरसते रहते हैं, हम सदा लालायित रहते हैं। हम पर दया करो, हम पर कृपा करो। ताकि हम आपको सरलता से पा सकें। इसलिए हे प्रभो। आप सदा मेरे बनो रहो, सर्वदा सर्वत्र उपलब्ध रहो। इस बात को यजुर्वेद का यह मन्त्र इस प्रकार उपदेश कर रहा है:

**अदित्यै सन्नासि विष्णोर्वे-ष्पोस्यूर्ज्जे त्वाऽदब्धेन त्वा चक्षुषाव-पश्यामि।**

**अग्नेर्जिह्वासि सुहूर्देवेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे।। यजु. १.३०।।**

१. हे प्रभो ! मैं सदा आप का बनकर रहूँ

मानव परमपिता का संदेश-वाहक होता है। वह उस पिता के सन्देश को (जिसे वेद भी कहते हैं) सदा जन-जन तक पहुंचाने का काम करता है। इसलिए यह सन्देश वाहक इस मन्त्र के माध्यम से प्रभु से प्रार्थना कर रहा है कि हे प्रभो में भव अर्थात् हे प्रभो ! आप मेरे बनिए, आप मेरे हो जाइए। मैं कभी प्रकृति के विभिन्न आकर्षणों में फंस कर उनमें लिप्त न हो जाऊं बल्कि सदा आप का ही बना रहूँ। आप की ही शरण में रहूँ। आप का ही स्तुतिगान करूँ अथवा आपका ही बन कर रहूँ।

मानव अथवा जीव प्रभु का बनकर क्यों रहना चाहता है ? वह प्रभु की शरण क्यों चाहता है ? वह प्रभु की पवित्र गोद को क्यों प्राप्त करना चाहता है। हम जानते हैं कि प्रभु सर्वशक्तिमान होने के कारण सब प्रकार के सुखों को देने वाले हैं। जब उसकी शरण मात्र में ही हमें सब सुख प्राप्त हो जाता हैं तो फिर हम उस प्रभु से दूर क्यों रहें ? जब उसकी गोद का अधिकार मात्र पाने से ही हम धन-धान्य संपन्न हो सकते हैं तो हम उस प्रभु से दूर कैसे रह सकते हैं ? इसलिए हम कभी प्रकृति के विभिन्न पदार्थों के सौदर्य में न उलझ कर, उन में न फंस कर अपना समय नष्ट न करें अपितु सदा प्रभु के बनकर उसके पास रहते हुए, उसकी गोदी को पाने का सदा यत्न करते हैं।

२. सदा प्रभु की शक्तियों को पाने का यत्न करूँ

मन्त्र आगे उपदेश कर रहा है कि धाम्ने-धाम्ने अर्थात् मैं प्रभु की एक एक शक्ति को पाने में सक्षम बनूँ। मानव की, जीव की सदा यह इच्छा रहती है कि वह शनैः-शनैः आगे बढ़े, निरंतर उन्नति पथ पर बढ़ता रहे। विश्व की सब सफलताएं उसके चरणों को चूमें किन्तु यह सब पाने के लिए उसे अनेक प्रकार की शक्तियां प्राप्त करनी होती हैं। यह ईश्वरीय शक्तियां प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त होने से ही मिला पाती हैं। इसलिए मानव के लिए आवश्यक है कि वह सदा ईश्वर की छत्रछाया में रहते हुए धीरे धीरे ईश्वर की वह सब शक्तियां, जो प्राप्त कर पाना संभव है, उन्हें प्राप्त करने का सदा प्रयास करते हुए सफलता पाता रहे।

३. मेरे कर्म यज्ञरूप हों

मानव जब ईश्वरीय शक्तियां पाने का अभिलाषी होता है तो उसे अपने आप को यज्ञरूप बनाना होता है। बिना यह रूप धारण किये अर्थात् परोपकार के बिना यह ईश्वरीय शक्तियाँ नहीं मिल पातीं। इसलिए मन्त्र कहता है कि यजुषे-यजुषे अर्थात् मैं अपने प्रत्येक कर्म को यज्ञात्मक बनाऊं। भाव यह है कि परोपकार मेरा मुख्य ध्येय हो। दूसरों की सेवा, दूसरों की सहायता ही मेरा मुख्य कर्म हो। यह सब करने वाला ही प्रभु का सच्चा सेवक होता है, सच्चे अर्थों में प्रभु के चरणों को पाने का अधिकारी होता है। इसलिए उस प्रभु की समीपता पाने के लिए हमें यज्ञरूप बनना होगा। ऐसा बने बिना हम प्रभु की निकटता पाने के अधिकारी नहीं हो सकते। इसलिए हम अपने आप को यज्ञमय बनावें। न केवल स्वयं को यज्ञमय ही बनावें अपितु स्वयं ही यज्ञ बन जावें।

परमपिता परमात्मा का आशीर्वाद पाने के लिए उस को प्रसन्न करना आवश्यक होता है। जब वह हम पर प्रसन्न हो जाता है तो वह अपने सब वैभव हम पर लुटाने के लिए सदा तैयार रहता है। प्रभु के पास बहुत से दिव्य-गुणों का भण्डार होता है। इन दिव्य-गुणों को पाने के लिए हम सदा लालायित रहते है। यह मंत्र भी हमें उपदेश करते हुए कह रहा है कि देवेभ्यः अर्थात् जीव मात्र की सदा यह अभिलाषा रहती है कि वह अनेक प्रकार के दिव्य-गुणों का स्वामी बनकर देवत्व के स्थान पर आसीन हो।

जीव देवत्व के पद को पाने के लिए सदा दिव्य-गुणों की प्राप्ति के लिए जूझता रहता है, लड़ता रहता है, संघर्ष करता रहता है। इस संघर्ष के परिणाम स्वरूप ही, उसके इस पुरुषार्थ के परिणाम स्वरूप ही वह कुछ दिव्य-गुण प्रभु के प्राप्त आशीर्वाद से पाने में सफल हो जाता है। यदि उसे प्रभु का आशीर्वाद प्राप्त न हो, यदि प्रभु की दया-दृष्टि का हाथ उसके सर पर न हो तो उसे यह कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए ही मन्त्र ने अपने उपदेश में कहा है कि हे प्राणी ! देवेभ्यः तू दिव्य-गुणों को धारण करने वाला बन। इसलिए ही जीव मन्त्र के इस शब्द के माध्यम से परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हे प्रभु ! मैं निरंतर दिव्यगुणों का स्वामी बनना चाहता हूँ। यह दिव्य-गुण आपकी शरण के बिना, आपके आशीर्वाद के बिना संभव नहीं हैं। मुझे आप का स्नेह चाहिए, मुझे आपका आशीर्वाद चाहिए। मुझे आपकी चरण-धूली चाहिए। मैं यह सब कुछ आपका बनकर ही प्राप्त कर सकता हूँ।

मेरी इस लालसा को पूर्ण करने के लिए हे प्रभु मैं सदा आप की सेवा में रहता हूँ। सदा आपकी चरण-धूलि को पाने का प्रयास करता हूँ। इसलिए हे प्रभु ! इन दिव्य-गुणों को पाने के लिए मेरी यही अभिलाषा है, मेरी यही कामना है, मेरी यही चाहना है कि आप मेरे बनो, मेरे बने रहो। इतना ही नहीं मैं भी सदा आप का ही बना रहूँ, आपके ही चरणों में निवास करते हुए सदा आप ही के गुणों का गान करते हुए इन गुणों को ग्रहण करुं, इन गुणों को अपने जीवन में धारण करते हुए आपके इन दिव्य-गुणों को प्राप्त करने का अधिकारी बनूँ।

परमात्मा की निकटता पाने से हमारी शक्तियां विकसित होती हैं। हम दिव्य-गुणों के स्वामी बनते हैं। इससे केवल हमारी शक्तियां ही नहीं बढ़तीं बल्कि हमारा प्रत्येक कर्म यज्ञीय भावना से ओत-प्रोत हो जाता है। हमारे कर्मो में परोपकार की, प्रभु आराधना की, दूसरों की सेवा की, दूसरों की सहायता की, दीन-दुःखियों को उठाने की भावना बलवती होती है। इस प्रकार हमारा प्रत्येक कर्म पवित्र हो जाता है।

दूसरी ओर यदि हम प्रभु से विमुख होते हैं तो हमें इन दिव्य शक्तियों में से कुछ भी प्राप्त नहीं होता। हम यज्ञीय नहीं बन पाते। परोपकार हमारे जीवन का भाग नहीं होता। इस कारण हम सदा दुःखों में, कष्ट-क्लेशों में डूबते हुए कभी खुश-प्रसन्न नहीं हो पाते। इस विपरीत प्रभाव से बचने के लिए हमें अपने जीवन को इस मन्त्र के उपदेश के अनुरूप बनाना आवश्यक हो जाता है।

अतः हम सदा इस प्रयत्न में रहें कि हम उस प्रभु को पाने के लिए, उस के आशीर्वाद में रहने के लिए, उस के आदेशों का पालन करते हुए सदा यज्ञमय बनने का, सदा पुरुषार्थी बनने का, सदा दिव्य-गुणों को पाने का प्रयास करते रहें। ऐसा करने से ही हमें अनेक प्रकार के दिव्यगुणों की प्राप्ति होगी। इससे ही हमें अनेक प्रकार के दिव्य-गुणों की प्राप्ति के साथ हमारी शक्तियों में वृद्धि होगी तथा हमारा जीवन यज्ञमय बनेगा। हम अन्यायपूर्ण ढंग से केवल अर्थ संचय की ओर न जाकर पुरुषार्थ से दिव्यगुणों के अधिकारी बनेंगे।

सम्पादकीय......

# निर्भया केस में दोषियों की सजा बहाल रखना सुप्रीम कोर्ट का सराहनीय फैसला

देश की राजधानी दिल्ली में 16 दिसम्बर 2012 को हुए अमानुषिक, अमानवीय कृत्य निर्भया बलात्कार एवं हत्याकाण्ड ने पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया था। इस अमानवीय कृत्य की पूरी दुनिया में निन्दा की गई थी। इस बलात्कार एवं हत्याकाण्ड़ के आरोपियों को दिल्ली हाईकोर्ट के द्वारा फांसी की सजा सुनाई गई थी। दिल्ली हाईकोर्ट के इस फैसले पर आरोपियों ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की थी। जिस पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए आरोपियों की फांसी की सजा को बरकरार रखा है। सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि **जिस तरह अपराध को अंजाम दिया गया, ऐसा लगता है कि यह दूसरी दुनिया की कहानी है। सैक्स और हिंसा की भूख के चलते इस तरह के जघन्यतम अपराध को अंजाम दिया गया। लिहाजा इन गुनाहगारों की फांसी की सजा बरकरार रखी जाती है। इस मामले में इन दोषियों की पृष्ठभूमि कोई मायने नहीं रखती। इस तरह के मामलों में उम्र, बच्चे, बूढ़े मां-बाप का होना सजा में रियायत की वजह नहीं हो सकते। इस तरह के अपराध की कोई कसौटी नहीं हो सकती। इस घटना ने समाज की चेतना को हिला दिया था।** सुप्रीम कोर्ट के जिस फैसले की प्रतीक्षा पूरे देश को थी वह आखिरकार सामने आ गया। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के प्रति स्वाभाविक तौर पर देश के लोगों में संतोष का भाव दिखाई दे रहा है और लोगों की श्रद्धा न्यायपालिका के प्रति और मजबूत हो गई है। अगर ऐसा नहीं होता तो शायद देश खुद को ठगा हुआ महसूस करता। देश की राजधानी और सबसे सुरक्षित शहर दिल्ली के अन्दर एक युवती के साथ चलती बस में सामूहिक दुष्कर्म की घटना इतनी भयावह थी कि उसने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। इस घटना को बीते 4 साल से भी ज्यादा वर्ष का समय हो गया है फिर भी कोई उसकी भयावहता को भुला नहीं पाया होगा। सुप्रीम कोर्ट ने यह पाया कि इस घृणित घटना को अंजाम देने वाले किसी रहम के हकदार नहीं हो सकते। यह एक ऐसी घटना थी जो यह मांग करती थी कि कठोर दंड के जरिये अपराधी तत्वों को सबक सिखाया जाए। देश की शीर्ष अदालत ने इस फैसले के द्वारा देश को जो संदेश देने की कोशिश की है उसे सभी को ग्रहण करना चाहिए। इस फैसले के द्वारा सुप्रीम कोर्ट ने समाज को यह स्पष्ट संदेश दिया है कि समाज में विकृत मानसिकता के लोगों को महिलाओं के प्रति अपनी सोच को बदलना होगा।

दिल्ली दुष्कर्म काण्ड़ के अपराधियों की फांसी की सजा पर रोक लगाने के साथ ही देश की शीर्ष अदालत ने जो टिप्पणियां की हैं उन्हें नीति-नियंताओं के साथ ही समाज को नसीहत और हिदायत के तौर पर लेना चाहिए। देश में महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों की एक बड़ी वजह वह मानसिकता है जिसके तहत महिलाओं को दायम दर्जे के नागरिक के तौर पर देखा जाता है। इस मानसिकता के चलते ही महिलाएं घर परिवार में उपेक्षित प्रताड़ित होती हैं तो बाहर छेड़छाड का शिकार होती हैं।

वैदिक काल में हमारे देश में नारी का बहुत ही ऊंचा और सम्माननीय रहा है। इसे देवी, श्री, लक्ष्मी, जननी तथा अम्बा आदि पवित्र नामों से पुकारा गया है। नारी वेद के शब्दों में संसार को पुकार कर स्वयं कहती है- **अहं केतुरहं मूर्धा अहं विवग् विवाचिनी। मम पुत्राः शत्रुहणः।।** अर्थात् मैं समाज की पताका हूं। मैं मस्तक हूं तथा मैं सबको जीवन उपदेश करने वाली हूं। मेरे पुत्र शत्रु का नाश करने वाले हैं तथा मेरी पुत्री विचारों का प्रकाश देने वाली है। माता को राष्ट्रनिर्माता के नाम से पुकार कर मातृजगत् का वन्दन किया जाता है। भारत को भी इसीलिए भारत माता कहा गया है। माता सचमुच विचारों का जीवन का तथा समाज का निर्माण करने वाली है। कौन है जिसका मस्तक लोपामुद्रा, रोमशा, गोधा एवं दूसरी मन्त्रार्थों का गम्भीर दर्शन करने वाली माताओं के सामने नहीं झुकता? कौन सरस्वती, गार्गी, मैत्रेयी, लीलावती, दुर्गा, मदालसा, दमयन्ती, सीता, रूक्मिणी आदि विदुषी और वीरता से भरी देवियों का वन्दन नहीं करता? किसके शरीर में जीजाबाई, लक्ष्मीबाई आदि वीर माताओं के वीररस पूर्ण कार्यों को स्मरण कर नवीन जीवन धारा का संचार नहीं हो जाता? सचमुच ही मातृशक्ति धन्य है। नारी में वीरता, कला, विद्या, निर्माण शक्ति, क्रान्तिमय विचार तथा स्नेह का स्रोत भरा होता है। भारत को तो अपने इस मातृजगत् पर सदा से ही गर्व रहा है।

समय परिवर्तन के साथ-साथ मध्यकालीन युग में नारी की स्थिति में भी परिवर्तन आ गया। भारत की मातृशक्ति देवियों ने भी आत्मज्ञान तथा आत्मसम्मान की भावना भुला दी। कुछ पुरूष समाज की स्वछन्द एवं संकीर्ण मनोवृत्तियों ने नारी के प्रति दूषित भाव प्रचारित कर दिए। मध्य युग में माता चारदीवारी में बन्द कर दी गई। किसी ने इसे नरक का द्वार कहा तो किसी ने पैर की जूती कह दिया। राष्ट्र निर्माता माता भोग विलास का निवास, मनोरञ्जन का साधन बना दी गई। मध्य युग में नारी जाति पर बहुत से अत्याचार किए गए। बाल विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा के कारण नारी के ऊपर बहुत से अत्याचार किए गए। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जाति के लिए कितना काम किया, नारी को कितना सम्मान दिलाया यह किसी से गुप्त नहीं है। आर्य समाज ने हमेशा नारी के लिए आवाज उठाई। नारी शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। इसी कारण आज नारी शिक्षित है, समाज में पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य कर रही है। जिस प्रकार नारी के कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ है उसके साथ ही उनसे छेडछाड़ की घटनाओं में भी वृद्धि हुई है। ऐसी परिस्थिति में कठोर कानून अपना असर दिखाते हैं। परन्तु कानून के साथ-साथ हर कोई यह समझे कि महिलाओं के प्रति पुरूष प्रधान समाज की मानसिकता में बदलाव लाने की सख्त जरूरत है और यह काम बच्चों की शिक्षा-दीक्षा में सुधार करके ही किया जा सकता है। जैसा सुप्रीम कोर्ट ने कहा वैसा ही पहले कई बार कहा जा चुका है कि बच्चों को प्रारम्भ से ही स्त्री का सम्मान करना सिखाया जाना चाहिए और इस क्रम में स्कूली पाठ्यक्रम में तब्दीली लाई जानी चाहिए। बच्चों के अन्दर नैतिक मूल्यों के द्वारा अच्छे गुणों का समावेश करें। इस काम को करने के लिए किसी आदेश-निर्देश की आवश्यकता नहीं है। बच्चों को महिलाओं के प्रति आदर का भाव सबसे पहले अपने परिवार से सिखाएं। जब पुलिस और अदालतों ने अपने हिस्से का काम कर दिया है तो फिर जरूरी हो जाता है कि समाज भी अपने हिस्से का कार्य करे। पुलिस और अदालतें तो कानून का सहारा लेकर लोगों के मन में बुरे कार्यों के प्रति भय पैदा करते हैं परन्तु समाज को अपना कार्य बहुत ही सुनियोजित और उचित ढंग से करना है। समाज को डर से नहीं अपितु नैतिक मूल्यों के द्वारा आज की युवा पीढी को चरित्रवान बनाना है। **-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं सभा महामन्त्री**

# "महर्षि दयानन्द के आर्य समाज वेद व अपने स्वयं के सम्बन्धी विचार

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

१. जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण स्वीकार कीजिए नहीं तो कुछ हाथ नहीं लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होगा और, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा "आर्य समाज" आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

२. मैं जैसा सत्य धर्म की उन्नति और स्वदेश का उपकार होने में प्रसन्न होता हूँ, वैसा किसी अन्य बात पर नहीं।

३. मेरा तात्पर्य किसी की हानि का विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य के निर्णय करने-कराने का है।

४. मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ, जो कि तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेश मात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

५. वैदिक धर्म प्रचार का कार्य बहुत अच्छा है। हम जानते हैं कि हमारे सारे जीवन में पूरा न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य ही पूर्ण करूँगा।

६. मैंने कोई नया पंथ चलाकर गुरूगद्दी वा मठ नहीं बनाया है। मैं तो लोगों को मठवादियों के मठों से स्वतन्त्र करना चाहता हूँ।

७. मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार वेद का उपदेश करता हूँ। सिवाय उपदेशक के और मैं कुछ अधिकार नहीं चाहता।

८. मैंने इस धर्म का सर्व-शक्तिमान्, सत्यग्राहक और न्याय सम्बन्धी परमात्मा की शरण में शीश घट उसी के सहाय के अवलम्ब से आरम्भ किया है।

९. मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है, इससे मेरी अवस्था एक माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय, राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे कितना पड़े, मुझे उसका कुछ भी ध्यान नहीं, परन्तु वाटिका हरी-भरी रहे और निर्विघ्न फूले-फले।

१०. मेरी अन्तःकरण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्य समाज स्थापित हो और देश में व्यापी हुई कुरीतियों का उन्मूलित हो जाएं।

११. यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान लोग। यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझते हुए अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूँ। इसको देख-दिखला के मेरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मेरा वा सब महाशयों का मुख्य कर्तव्य काम है। सर्वन्तर्यामी, सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी कहे।

१२. बारहवें समुल्लास में जैनियों के मत के विषय में लिखा है, सो-सो ग्रन्थों के पतेपूर्वक लिखा है। इसमें जैनी लोगों को बुरा न मानना चाहिए क्योंकि जो जो हमने मत विषय में लिखा है, वह केवल सत्यासत्य के निर्णयार्थ है, न कि विरोध वा हानि करने के अर्थ। इस लेख को जब जैनी, बौद्ध वा अन्य लोग देखेगें तब सबको सत्यासत्य के निर्णय में विचार और लेख करने का समय मिलेगा और बोध भी होगा।

१३. यह बौद्ध-जैन मत का विषय बिना इसके अन्य मत वालों को अपूर्ण लाभ और बोध कराने वाला होगा क्योंकि ये लोग अपने पुस्तकों को किसी अन्य मतवालों को देखने, पढ़ने वा लिखने को भी नहीं देते। भला यह किन विद्वानों की बात है कि अपने मत की पुस्तक आप ही देखना और दूसरों को न दिखलाना।

१४. जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बाईबल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूँ, सबको करना योग्य है।

१५. यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और हंसता हूँ तथापि जैसा इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ, वैसी ही बूरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्त्तता हूँ। जैसे स्वदेश वालों के साथ मनुष्य उन्नति के विषय में वर्तता हूँ, वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी वर्त्तना योग्य है।

१६. वेद, अर्थात् जो-जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस-उस का हम यथावत् करना, छोड़ना मानते हैं। जिस लिए हम को वेद मान्य है, इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब मनुष्यों को विशेष आर्यों को एक मत होकर रहना चाहिए।

१७. संसार में जितने दान है, अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथ्वी, वस्त्र, तिल और घृत आदि इन सब दानों में वेद विद्या या दान सर्वश्रेष्ठ है।

१८. प्राचीन काल में आर्यजन वैदिक संस्कार किया करते थे। वैदिक आचरण युक्त होते थे। इसलिए उनकी सन्तान में ओज होता था, तेज होता था और शूरवीरता होती थी। परन्तु इस युग में लोग इन्द्रियाराम और विषयानन्द को ही प्रधानता दिये हुए है, वैदिक संस्कारों का त्याग कर बैठे हैं। लोगों के घरों में कुरीतियों की भरमार है। इसलिए उनकी सन्तान भी निस्तेज, दीन, दुखिया उत्पन्न होती है।

१९. हम तो यही मानते हैं कि सत्यभाषण, अहिंसा, दया आदि शुभगुण सब मतों में अच्छे हैं बाकी वाद-विवाद, ईर्ष्या-द्वेष, मिथ्या-भाषणादि कर्म सब मतों में बुरे हैं। यदि तुम को सत्य मतग्रहण की इच्छा हो तो वैदिक मत को ग्रहण करें।

२०. ओ३म् उसका नाम है, जो कभी नष्ट नहीं होता, उसी की उपासना करनी योग्य है। अन्य की नहीं। सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान व निज नाम "ओ३म्" को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम हैं। सब वेद सब धर्म अनुष्ठान रूप तपश्चरण जिसका कथन और मान्य करते और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्य आश्रम करते हैं, उसका नाम "ओ३म् है।

## नए सत्र का शुभारम्भ

दयानन्द पब्लिक स्कूल में नए शैक्षणिक सत्र के आरम्भ में प्रिंसीपल मैडम की अध्यक्षता में अंग्रेजी कविता उच्चारण प्रतियोगिता और Talent Hunt Competition आयोजित किया गया। अंग्रेजी कविता उच्चारण प्रतियोगिता में कक्षा प्रथम से कक्षा पांचवी तक के बच्चों ने बाग लिया Talent Hunt Cometition में Solo song, Dance, Mimicry में कक्षा छटी से आठवीं तक के बच्चों ने भाग लिया। कविता उच्चारण प्रतियोगिता में कक्षा चतुर्थ के विद्यार्थियों ने समूह गान में प्रथम पुरस्कार, कक्षा तृतीय के विद्यार्थियो ने द्वितीय पुरस्कार और कक्षा द्वितीय के विद्यार्थियों ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। Talent Hunt में Dance प्रतियोगिता में आठवीं कक्षा की मिताली, गुनगुन ने प्रथम पुरस्कार, द्वितीय पुरस्कार आठवीं कक्षा की राधा और तृतीय पुरस्कार कक्षा छठी की सविता ने प्राप्त किया। स्कूल की प्रबंधकीय कमेटी के प्रधान श्री संत कुमार जी, उपप्रधान श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल जी ने मैनेजर श्री मनीष मदान मुख्यातिथि की भूमिका निभाई। विजेता छात्राओं को पुरस्कार एवं सर्टीफिकेट देकर सम्मानित किया गया। मुख्यातिथि जी ने बच्चों के अच्छे प्रर्दशन के लिए उनकी प्रशंसा की और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। प्रिंसीपल मैडम ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया और बच्चों का नए सत्र की शुभकामनाएँ दी।

-दयानन्द पब्लिक स्कूल, लुधियाना

# बृहदारण्यक उपनिषद में गायत्री का अर्थ

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

'भूमि-अन्तरिक्ष-द्यौ-ये आठ अक्षर हैं गायत्री के तत् सवितुवरेणियम्' इस पद में भी आठ अक्षर हैं इसलिए गायत्री के प्रथम पद के अक्षर मानो भूमि, अन्तरिक्ष और द्यौ तीनों लोगों के द्योतक हैं। इस पद का उच्चारण करता हुआ तीनों लोकों का ध्यान करे। जो गायत्री के प्रथम पद को इस प्रकार जानता है वह तीनों लोकों में जितना प्राप्तव्य है उतना पा लेता है। 'ऋच: यजुंषि सामानि' इस पद में भी आठ अक्षर हैं गायत्री के द्वितीय पद 'भर्गो देवस्य धीमहि' में भी आठ अक्षर हैं। इसलिए गायत्री के द्वितीय पद के अक्षर मानों 'ऋच: यजुंषि-साम' त्रयी विद्या है। इस पद का उच्चारण करता हुआ त्रयी विद्या का ध्यान करे। जो गायत्री के द्वितीय पद इस प्रकार जानता है वह त्रयी विद्या में जितना प्राप्तव्य है उतना पा लेता है।

'प्राण-अपान-विआन' ये आठ अक्षर हैं। गायत्री के 'धियो योन: प्रचोदयात्' इस पद में भी आठ अक्षर हैं। इसलिए गायत्री के तृतीय पद के अक्षर मानो' प्राण-अपान व्यान ये तीनों प्राण हैं। इस पद का उच्चारण करता हुआ तीनों प्राणों का ध्यान करे। जो गायत्री के तृतीय पद को इस प्रकार जानता है वह जितना प्राणि समुदाय में प्राप्तव्य है उतना प्राप्त कर लेता है।

गायत्री के तीनों पदों की व्याख्या हो गई। गायत्री का एक 'तुरीय दर्शत्' 'परोरजो' पद भी है। तुरीय का अर्थ है चतुर्थ पद, दर्शत् का अर्थ है 'जो दीखता हैं, तथा 'परोरजा' का अर्थ है प्रकृति से भी जो परे है। गायत्री का यह जो प्रकृति से भी परे, दीखता सा, चतुर्थ पद वही है जो विश्व में तप रहा है। गायत्री के उसी चतुर्थ पद के प्रताप से यह निखिल विश्व, एक के ऊपर दूसरा मानो एक महान तपस्या में लीन है। जो गायत्री के चतुर्थ पद को प्रकृति से भी परे हो रही, दीखती सी तुरीय रूप प्रभु की तपस्या से देख लेता है वह भी श्री और यश से तप उठता है चमक उठता है।

गायत्री की प्रतिष्ठा पहले तीन पदों में नहीं इसी 'तुरीय दर्शत परोरज' पद में है। यह तुरीय पद 'सत्य' में प्रतिष्ठित है। 'चक्षु सत्य है, चक्षु ही सत्य है। जब दो। व्यक्तियों में विवाद होता है, एक कहता है मैंने देखा है,दूसरा कहता है मैंने सुना है तो जो कहता है मैंने देखा हैं उसी की बात को हम सब स्वीकार करते हैं। गायत्री का दर्शत नाम का चतुर्थ पद मानो प्रभु के उस 'दर्शन' पद का स्मरण करा रहा है। जो विश्व में तपस्या करता हुआ मानों आंखों से प्रत्यक्ष देख रहा है। दर्शत होने से यही उसका सत्य पद है। सत्य बल में प्रतिष्ठित है-

सत्य में ही बल होता है असत्य में बल नहीं होता। वह बल केवल भौतिक बल नहीं है। वह बल तो प्राण है इसलिए सत्य बल में और बल, प्राण में प्रतिष्ठित है। बिना प्राण शक्ति के बल नहीं होता तभी तो कहते हैं बल सत्य से बड़ा है। जिस प्रकार गायत्री आधिभौतिक जगत् में, ब्रह्माण्ड में उपासक को प्राण शक्ति के महत्व को दर्शाती है उसी प्रकार अध्यात्म में पिण्ड में भी गायत्री की ऐसी ही प्रतिष्ठा है। गय नाम प्राणों का है क्योंकि वह शरीर के गय अर्थात् प्राणों की रक्षा करती है, त्राण करती है इसलिए इसे गायत्री कहते हैं।

गायत्री का ध्यान वास्तव में प्राणों का इन्द्रियों का संयमन है।

आचार्य उपनयन के समय ब्रह्मचारी को जिस सावित्री का उपदेश देता है वह यही गायत्री है। गायत्री के उपदेश देने का यही अभिप्राय है कि शिष्य के प्राणों की रक्षा करना उसे अपने भीतर नवजीवन संचार करना सीखाना।

कई लोग कहते हैं अनुष्टुप छन्द वाली सावित्री 'तत्सवितु- र्वृणीमहे, वयं देवस्य भोजनम्, श्रेष्ठ सर्ववातमम्, तुरंभागस्य धीमहि' का उपदेश करे क्योंकि यह अनुष्टुप् छन्द वाली सावित्री चार पदों वाली होने से वाणी रूपा है परन्तु ऐसा नहीं करे। हम तो यही कहते हैं कि त्रिपदा गायत्री ही सावित्री है इसी का उपदेश करे। त्रिपदा गायत्री का जिस रहस्य का उद्घाटन किया गया है उसे जानने वाला यदि भारी दक्षिणा भी ले ले तो वह गायत्री के एक पद में बराबर भी नहीं है। यदि किसी को भरे हुए तीनों लोकों की प्राप्ति हो जाय तो वह गायत्री के प्रथम पद के समान है, यदि किसी को त्रयी विद्या की प्राप्ति हो जाए तो वह गायत्री के द्वितीय पद के समान है, यदि किसी को सम्पूर्ण प्राणि जगत् की प्राप्ति हो जाय तो वह गायत्री के तृतीय पद के समान है।

गायत्री का जो चौथा पद 'दर्शत तुरीय परोरज' है जो विश्व में तप रहा सा दीखता है इसकी तुलना तो किसी भौतिक पदार्थ से नहीं ही की जा सकती है कहाँ से इतना लाये जिससे इसकी तुलना की जा सके। अब गायत्री का 'उपस्थान' कहते हैं, मानो गायत्री को मूर्तरूप में देखते हुए उसके समीप खड़े होकर उसे संबोधन करते हैं।

हे गायत्री। त्रिलोकी तेरा प्रथम पद है, त्रयी विद्या तेरा द्वितीय पद है, तीनों प्राण तेरा तृतीय पद है, सबका प्रकाश करने वाला 'परोरज दर्शत' तेरा चतुर्थ पद है। यद्यपि तेरे इतने पद हैं तथापि तू पद रहित है, अपद है क्योंकि तू जानी नहीं जा सकती। तेरे 'तुरीय दर्शत परोरज पद को मेरा नमस्कार है। जिसे मैं द्वेष करता हूँ वह इस पद को न प्राप्त हो, उसकी कामना समृद्ध न हो ! जिसके लिए गायत्री विद् इस प्रकार गायत्री का उपस्थान करता है और यह प्रार्थना करता है कि उसको अभीष्ट प्राप्त न हो और उसका अभीष्ट भी मैं ही प्राप्त करूं, तो उस शत्रु की कामना सिद्ध नहीं होती और गायत्रीविद् की कामना सफल होती है।

कहते हैं राजा जनक ने अश्वतराश्व के पुत्र बुडिल से कहा आप तो अपने को गायत्री के जानने वाले कहते हैं फिर क्यों दुनिया के माल ऐसे ढोते फिरते हो जैसे कोई हाथी ढो रहा हो ? बुडिल ने कहा ने मैं गायत्री के शरीर को तो जानता हूँ उसके मुख को नहीं जानता अर्थात् केवल पढ़ा हुआ ही हूँ गूढ़ा हुआ नहीं हूँ। जनक ने कहा, गायत्री का अग्नि मुख है, गायत्री को गुढ़ोगे तो अग्नि मुख हो जाओगे। जो व्यक्ति गायत्री के अग्नि मुख को सिद्ध कर लेता है वह यदि ऐसा भी दीखता है कि भारी पाप से लदा है, पाप कर रहा है तो उसे भी वह अग्नि की तरह खा डालता है, भस्म कर देता है और शुद्ध, पूत, अजर, अमर, हो जाता है। इति शुभम्।'

## आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना

**आर्य समाज** अपने स्थापना काल से ही सामाजिक रूढ़ियों, पाखण्ड, अन्धविश्वास, गुरुड़मवाद पर कड़ा प्रहार करता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप समाज में अनेक प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जहाँ तपस्वी विद्वानों ने अपना सर्वस्व अर्पण कर भारतीय संस्कृति के आधार वेद का प्रचार-प्रसार करने में अपनी लाभ-हानि नहीं देखी, वहीं गीत, भजन व उपदेश के माध्यम से दादा बस्तीराम जी, चौधरी पृथ्वी सिंह बेधड़क जी, मंगल वैद्य जी, स्वामी भीष्म जी जैसे अनेक भजनोपदेशकों ने अपनी जान हथेली पर रख कर वेद का प्रचार-प्रसार किया।

**आचार्य देवव्रत जी,** महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश के मन में हमेशा से ही यह भाव रहा है कि गाँव, देहात में वेद का प्रारम्भिक प्रचार भजनोपदेशकों के माध्यम से जितना कारगर हो सकता है, उतना अन्य से नहीं। इसी भावना को मन में रखते हुए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में '**आर्य भजनोपदेशक प्रशिक्षण केन्द्र**' की स्थापना की गई है। इस प्रशिक्षण केन्द्र पर विधिवत् प्रशिक्षण प्रारम्भ हो चुका है। जो भी प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक व्यक्ति है, उसके आवास, प्रशिक्षण एवं भोजन का व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क रहेगी। प्रशिक्षिण के बाद गुरुकुल के माध्यम से ही उचित मानदेय पर अपनी सेवा भी प्रदान कर सकेंगे। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

**-कुलवन्त सिंह सैनी प्रधान, गुरुकुल प्रबन्धकर्त्री समिति**

# संसार में सुख शान्ति का एक मात्र मार्ग उत्तम चरित्र निर्माण

ले. -पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने मानव जगत में सुख शान्ति के लिए संस्कार विधि की रचना करके जन्म से मृत्यु तक सोलह संस्कारों को करने का विधान किया है। वह कहतें है जिससे शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते है। और सन्तान अत्यन्त योग्य होते है, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

जीवात्मा अमर तथा नित्य है। जन्म जन्मान्तरों में उसके साथ सूक्ष्म शरीर मृत्यु पर्यन्त रहता है। और यही सूक्ष्म शरीर जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों या वासनाओं का वाहक होता है। ये संस्कार शुभ व अशुभ दोनों प्रकार के होते है। जब जीवात्मा दूसरे शरीर में प्रवेश करता हैं उसको नई परिस्थिति के भी बहुत से शुभाशुभ प्रभाव मिलते है।

उनके बुरे प्रभावों को अभिभूत करने तथा शुभ प्रभावों को उन्नत करने के लिए संस्कारों या स्वच्छ वातावरण की परम आवश्यकता है।

**पन्त्रस्वन्तः पुरूष या वियेश**
**( यजुः )**

इस लेख द्वारा आज हम मनुष्य के पांच मौलिक चरित्रों पर विचार करके जीवन में उतारने की प्रेरणा करते हैं। मानव को उत्तम स्वभाव बनाने के लिए सर्व प्रथम पांच बातों का ध्यान रखना चाहिए। और सम्पूर्ण मानव जगत पांच के भीतर स्थित है। प्रत्येक जहां अपने आप में प्रवष्टि है, विश्व में प्रविष्ट है। प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में एक इकाई है, किसी परिवार का अंग है, किसी समाज का अंग है, किसी समाज का सदस्य है, राष्ट्र का सदस्य है। विश्व का सदस्य है। परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व का नागरिक होने से उसे कई रिश्ते नाते में कई भूमिकाएं है। उनको तभी निभा सकता है जब अपने संस्कारों में पांच प्रकार के चरित्रों का निष्पादन करें। यदि प्रत्येक मनुष्य इन चरित्रों को अपनाने में अपनी भूमिका अदा करें तो मानव समाज में चारो ओर सुख शान्ति बनी रहेगी। आइऐ इन पांच चरित्रों पर विचार करते है।

**उत्तम चरित्र की पांच शाखाऐं हैं**

1. वैयक्तिक चरित्र 2. परिवारिक चरित्र 3. सामाजिक चरित्र 4. राष्ट्रीय चरित्र 5. विश्व चरित्र

इन चरित्रों के निर्माण व व्यवहार से मानव सच्चे अर्थो मैं समाज का निर्माण करता है, और धर्मात्मा वही है जो उक्त चरित्रों का पालन करता है। यदि किसी में इनका अभाव है तो वह अधर्मी है।

**1. वैयक्तिक चरित्र**-इस चरित्र का सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन से है। और यह व्यक्तिगत चरित्र ही परिवार, समाज, राष्ट्र, विश्व में सहायक होते है। इसके उन्नति व निर्माण के लिए सात गुण अति आवश्यक है।

1. सुश्रुति-अर्थात् सदैव अपने दैनिक आचरण में सुविचारों को ही ग्रहण करना।

2. सुवाणी-अर्थात् सत्यवाणी, मधुरवाणी, सयंतवाणी, निर्मलवाणी का प्रयोग करना।

3. सुस्नेह-अर्थात् परिवार समाज राष्ट्र व विश्व के प्रति सुस्नेह रखना।

4. सुसयंम-अर्थात् प्रत्येक कार्य में स्वयं में संयम रखकर व्यवहार करना।

5. निर्लोभी-अर्थात् लोभ की भावना का त्याग व निस्वार्थ कार्यों की प्रबलता।

6. सुसेवा-अर्थात् जीवन के विचारों को परहित सुसेवा में प्रधानता देना।

7. निस्वार्थी-अर्थात् प्रत्येक कार्य में अपना स्वार्थ न देखकर परमार्थ रखना।

ये सात गुण उत्तम चरित्र के मूलाधार है और प्रत्येक मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के लिए इन सप्त गुणों पर आधारित होना चाहिए, यदि परिवार का प्रत्येक सदस्य उक्त आचरणों के संस्कार बना ले तो परिवार, व समाज व राष्ट्र में सर्व उन्नति होगी। शिष्ट व्यक्ति अशिष्टता का उत्तर शिष्टता से देता है, अभद्रता का भद्रता से, अपमान का मान से, बुराई का भलाई से, अन्याय का न्याय से उत्तर देता है। व्यक्तिगत उत्तम चरित्र सभी मनुष्यों के लिए अनिवाय है।

**2. परिवारिक चरित्र**-यदि व्यक्तिगत चरित्र उत्तम है परिवारिक समूह का भी उत्तम होगा, परिवार के चरित्र में क्रोध, मनमुटाव, रूष्ट होना, और बोल चाल बन्द करने का कोई स्थान नहीं है। प्रत्येक सदस्य को एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए, एक दूसरे की भावनाओं की कद्र करनी चाहिए। एक दूसरे की उन्नति में सहायक होना चाहिए। परिवार में शारीरिक उन्नति, मानसिक और आत्मिक उन्नति के कार्य करने चाहिए,. सारे परिवार को सत्य ईश्वर, और ईश्वरीय वाणी वैदिकधर्मी, व वैदिक संस्कारों वाला होना चाहिए। सबको परिवार में मधुर भाषा का प्रयोग करना चाहिए। खानपान सात्विक होना चाहिए। यह गुण परिवार के प्रत्येक सदस्य के संस्कारों में तभी आ सकते है जब परिवार के प्रत्येक सदस्य का व्यक्तिगत चरित्र उत्तम होगा।

**3. सामाजिक चरित्र**-मानव सामाजिक प्राणी है, इसे हर कदम पर प्रत्येक वस्तु के लिए एक दूसरे की सहायता लेनी पड़ती है, अर्थात् हम एक दूसरे के ऋणी रहते हैं। सर्व हितकारी नियम पालन करना चाहिए। सबको अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सामाजिक चरित्र तभी उन्नत होगा जब निम्न पांच नियमों का पालन प्रत्येक नागरिक, सामाजिक संस्थाऐं, धार्मिक संस्थाऐं करते हो।

जैसे 1. अंहिसा-मन वचन कर्म से किसी भी प्राणी को हानि न पहुंचाना।

2. सत्य-प्रत्येक कृत्य, और व्यवहार में सदैव सत्य का पालन करना।

3. अस्तेय-किसी को भी धोखा देकर दूसरे की वस्तुओं को न लेना, अर्थात झूठ न बोलना

4. ब्रह्मचर्य-सभी नागरिकों को सदाचारी होना।

5. अपरिग्रह-आवश्यकता से अधिक धन व सम्पति न जोड़ना तथा लोभ न करना।

अर्थात्: मनसा वाचा कर्मणा से सबको एक होना चाहिए। मानव समाज की इकाई है व बुनियाद है इसलिए सामाजिक सेवा में सामाजिक उन्नति में समाज के नियमों का पालन तथा परहित के नियमों का पालन समझदारी की भावना से करना चाहिए।

**उदाहरण**-हमें याद रखना चाहिए कि हम सदैव समाज के ऋणी होते है। उदाहरण रूप में ले लीजिऐ हम एक कप चाय पीते है तो कितने लोगों के सहयोग से पीते है। किसी ने चाय के बगीचे में चाय की पत्तियां तोड़ी, किसी ने सुखाई तो किसी और ने तैयार की, किसी ने खेत में गन्ना बोया, किसी ने चीनी तैयार की, किसी ने दूध उत्पादन किया, किसी ने बनाकर पिलाई। अब आप देखिये हम दैनिक जीवन में कितनी वस्तुओं का प्रयोग करते है। एक दूसरे पर निर्भर रहते है अर्थात हम प्रत्येक क्षण समाज के ऋणी रहते है।

**4. राष्ट्रीय चरित्र**-मातृभक्ति, राष्ट्रभक्ति, राष्ट्र निष्ठा, राष्ट्रा सेवा, राष्ट्र के लिए बलिदान की भावना सदैव राष्ट्र की उन्नति के कार्य करना ये सब राष्ट्र प्रगति के साधन है, हमारा सर्व प्रथम और सर्वश्रेष्ठ कार्य व कर्तव्य मातृभूमि की रक्षा करना है। राष्ट्र रक्षा हेतु जिन वीरों ने बलिदान किये है, तथा जिन समाज सेवियों ने राष्ट्र के लिए उत्तम कार्य किये है उनका स्मरण, अनुकरण, सम्मान करना चाहिए। अर्थात् राष्ट्र की समृद्धी, स्वच्छ विचार, समान अधिकार, राष्ट्र भक्ति, राष्ट्र प्रेम और सर्व हितकारी नियमों का पालन प्रत्येक नागरीक का कर्तव्य है।

**5. विश्व चरित्र**-अन्तराष्ट्रीय नीति में शुद्धता, विदेश नीति का पालन, राष्ट्र की मर्यादा को अक्षुण बनाने हेतु संयुक्त राष्ट्र सभा में अपने राष्ट्र की उत्तम नीतियों को स्पष्टता से रखना, राजनीतिक सम्बन्धों को मधुर बनाना, सर्वहितकारी वार्ता द्वारा राजनैतिक समझौते करना संयुक्त राष्ट्र सभा के नियमों का पालन करना। युद्धनीति के बजाए, आपसी सहमति से शान्ति स्थापित करना, तथा आयात निर्यात वस्तुओं पर सन्तुलन सर्वहित में बनाकर रखना तथा छोटे से छोटा और बड़े से बड़े राष्ट्र का सम्मान करते हुए, सर्वहित नियमों का पालन करना। ये सभी गुण अन्तराष्ट्रीय जीवन में प्रत्येक राष्ट्र को सुखद बनाते है।

# हवन करके जन्मदिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग फिरोज़पुर शहर में श्री डी आर गोयल जी का 73वां जन्मदिवस मनाया गया बहुत सादगी ढंग से यह जन्मदिवस मनाया गया। सबसे पहले श्री डी आर गोयल जी अपनी धर्मपत्नी डा. सुदेश गोयल साथ यजमान पद पर बैठे, पडिंत शिवा शास्त्री जी ने वैदिक रीति से बहुत ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ करवाया जिसमें श्री डी आर गोयल जी को बधाई दी गई तथा लम्बी आयु हो ईश्वर से प्रार्थना करते हुये मन्त्रों का उच्चारण क्रिया गया उपरान्त श्री विजय मल्होत्रा तथा श्री हेमन्त स्याल जी ने श्री गोयल जी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में भजन पेश किये। उसके बाद श्री शिवा शास्त्री जी ने जन्म दिवस किस तरह से मनाया चाहिये। अक्सर लोग पुरानी विधि या अपने कल्चर को भूल रहे है। लोग केक काटते है क्या हमे अपने जिन्दगी के दिनों को काटना चाहिये केक काटकर, बाद में अश्लील गीतों को गाकर तथा उन चीजों का सेवन करते है। जिनसे हमारे बच्चों पर बुरा असर पड़ता है। आज हम अच्छाई को छोड़कर बुराई की ओर जा रहे है हमें अपने जीवन को सुधारना होगा। यदि हम इसी तरह गन्दे कामों में फंसते रहे। हम अपना जीवन ही नहीं आने वाले पीढ़ी की जिन्दगी भी बरबाद कर रहे है। उन्होंने श्री डी आर गोयल की प्रशंसा करते हुये कहा मैं इस तरह के कार्य को देखता रहता हूँ। परन्तु बहुत कम लोग है जो वैदिक रीति से श्रद्धापूर्वक यज्ञ करके नेक कार्य करते है। बाद में श्रीमति प्रेमसखी, बीना मोगा, अनिता भटिया ने श्री डी आर गोयल को आर्य समाज मन्दिर की तरह से शुभकामनाये देते हुये एक तोफहा दिया।

अन्त में श्री डी आर गोयल जी ने घोषणा की हमारे आर्य समाज मन्दिर का भवन निर्माण हो रहा है। पैसों की कमी कारण काम रुक गया है।

मैं जल्दी ही तीसरी किश्त अदा करुंगा ईश्वर से कामना करता हुए कि हमारा यह भवन शीघ्र ही एक सुन्दर भवन का रूप लेगा। जिससे हम सभी सुन्दर सत्संग हाल में बैठकर ईश्वर के गुणगान करें। **-विपन धवन ( उपप्रधान )**

# आर्य समाज कमालपुर होशियापुर का निर्वाचन

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर का त्रिवार्षिक निर्वाचन दिनांक 30-04-2017 (रविवार) को 10.00 बजे प्रात: दयानन्द हाल में सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व श्रीमती डा. सविता गुप्ता एवं श्रीमती दुर्गेश नन्दिनी शारदा ने यज्ञपद को सुशोभित किया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने यज्ञकुण्ड में आहुतियां डालीं। आचार्य भद्रसेन ने आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् सचिव प्रो. यशपाल वालिया ने निर्वाचन की प्रक्रिया शुरु करते हुए गत वर्षों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और आर्य समाज के प्रचार और प्रसार के लिये महत्वपूर्ण कार्यक्रम रखने पर बल दिया। सर्वसम्मति से उपस्थित मान्य सदस्यों ने प्रो. नवल किशोर शर्मा को प्रधान और प्रो. यशपाल वालिया को मन्त्री पद पर बने रहने की स्वीकृति दी। साथ ही आर्य समाज का कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिये नव निर्वाचित प्रधान प्रो. नवल किशोर शर्मा को अधिकृत किया कि वे पदाधिकारियों का चयन करें और अंतरंग सदस्यों के नाम अंकित करें। आचार्य भद्रसेन जी के देख रेख में निर्वाचन सम्पन्न हुआ।

इसी श्रृंखला में प्रचार मन्त्री डा. प्रो. पी. एन. चोपड़ा ने अपने मुख्य उद्बोधन में बोलते हुए कहा कि व्यक्ति को स्थित प्रज्ञा होते हुए अपने जीवन को बिताना चाहिये। गीता के दूसरे अध्याय की ओर संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि आज का व्यक्ति प्राय: संगदोष का शिकार होता जा रहा है। मन और बुद्धि को एकाग्र रखते हुए व्यक्ति यदि अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है तो उसका अपना कल्याण तो होगा ही, वस्तुत: उसके पास पड़ोस का वातावरण भी शुद्ध एवं सार्थक हो जायेगा और इस प्रकार एक आत्म निर्भर और सशक्त समाज के निर्माण की परिक्रिया आरम्भ हो जायेगी। प्रो. के. सी. शर्मा ने नव निर्वाचित प्रधान और मन्त्री को बधाई दी और सभी उपस्थित आर्यजनों को धन्यवाद दिया। अन्तत: सभी ने मिल बैठ ऋषि प्रसाद का रसावादन किया।

इसी अन्तराल में प्रधान प्रो. नवल किशोर शर्मा ने निम्नलिखित पदाधिकारियों को मनोनीत किया। कार्यकारिणी की रूप रेखा भी इस प्रकार से है।

प्रो. नवल किशोर शर्मा प्रधान, प्रो. यशपाल वालिया मन्त्री, श्रीमती सुमेधा साहनी स्त्री प्रधाना:, श्री जगदीश भाटिया वरिष्ठ उप प्रधान, श्रीमती बिमला भाटिया वरिष्ठ उप प्रधाना:, श्री इन्द्रदेव शर्मा कोषाध्यक्ष, श्री के. एल. चौहान पुस्तकाध्यक्ष, श्री प्रेम ऐरी उपप्रधान, श्री के. सी. शर्मा सहमन्त्री, श्री के. आर. आहलुवालिया उप प्रधान, श्री दर्शन कुमार सहकोषाध्यक्ष, श्रीमती डा. सविता गुप्ता उपप्रधाना: डा. पी. एन. चोपड़ा प्रचार मन्त्री, श्री बलराज वासुदेव उपप्रधान, अंतरंग सदस्य-श्री अश्वनी कपूर, श्री अविनाश भंडारी, श्री अश्वनी शर्मा, श्रीमती ऊषा मायर, श्री सलिल चोपड़ा, श्री राम प्रकाश कपूर, श्री रमन कपूर, श्रीमती दुर्गेश नन्दिनी शारदा, श्री ओम प्रकाश सैनी। **-शुबेन्धु आर्य**

# तपा में पारिवारिक सत्संग का आयोजन

आर्यसमाज तपा की तरफ से शुरू पारिवारिक सत्संगों की कड़ी के अंतर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सदस्य सी. मारकंडा के स्व: सुपुत्र समीर मारकंडा पत्रकार की याद में उनके निवास स्थान पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। हवन यज्ञ के यजमान एडवोकेट भावना मारकंडा थे। आर्य समाज के प्रधान डा. राज कुमार शर्मा ने गायत्री मंत्र के पाठ उपरान्त वैदिक मंत्रों और संस्कृत के श्लोकों का उच्चारण किया। आर्य समाज के भजनों का गान भी किया गया। डा. राज कुमार ने अपने प्रवचन द्वारा वेद मंत्रों की व्याख्या की और आर्य समाज के गौरवमयी इतिहास पर रौशनी डाली। इस अवसर पर हरबंस लाल मारकंडा, शादी राम, अशोक कुमार शर्मा, डा. मदन लाल शर्मा, डा. सुरेश, प्रसन्न शर्मा, सत पाल मौड सीनियर पूर्व प्रधान आर्य स्कूल, जवाहर लाल बांसल पूर्व प्रधान आर्य स्कूल, डा. तेजिन्दर मारकंडा, मनप्रीत जलपोत प्रैस सचिव जिला कांग्रेस, मुख्याध्यापक राम गोपाल, हाकम सिंह चौहान, माकण सिंह भुल्लर और अशोक मित्तल आदि ने आहूतियां प्रदान। शान्ति पाठ उपरान्त ऋषि लंगर बांटा गया। **-राम गोपाल**

# चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर 16डी. दयानन्दमार्ग (वकीलरोड), नई मण्डी. मुजफ्फरनगर की कार्यकारिणी (अन्तरंग सभा) का चुनाव वर्ष 2017-18 के लिये, चुनाव अधिकारी बाबू जितेन्द्रकुमार एडवोकेट (पूर्व महासचिव, जिला बार संघ, मुजफ्फरनगर) के निर्देशन में सर्वसम्मति से आज दिनांक 23.04.2017 को प्रात: 9:45 साप्ताहिक यज्ञ-सत्संग के उपरान्त आर्यसमाज के सभागार में श्री बाबू राजपालसिंह चाहल एडवोकेट के सान्निध्य में व श्री आनन्द पाल सिंह आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुये-

श्री राजपाल सिंह चाहल, संरक्षक एडवोकेट, श्री आनन्दपाल सिंह आर्य प्रधान, श्री देवी सिंह आर्य उप प्रधान, श्री आर. पी. शर्मा मन्त्री, श्री देवीसिंह सिम्भालका उपमन्त्री, श्री वीरेन्द्रसिंह आर्य उपमन्त्री, श्री गुलबीरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष, श्री राकेशकुमार आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री मंगतसिंह आर्य उपपुस्तकालयाध्यक्ष, श्री अमोदकुमार आर्य अधिष्ठाता आर्यवीर दल, श्री सुरेन्द्रपाल सिंह आर्य प्रचार मन्त्री, श्री डॉ० नरेश कुमार आर्य संगठन मन्त्री, श्री यशपाल सिंह मलिक भण्डार अध्यक्ष, श्री मास्टर सोमपाल सिंह आर्य सदस्य अन्तरंग सभा, श्री इं. रणबीरसिंह आर्य सदस्य अन्तरंग सभा, श्री अशोक बालियान सदस्य अन्तरंग सभा, श्री योगेन्द्र कुमार बालियान सदस्य अन्तरंग सभा, श्री महाशय जयप्रकाश वर्मा सदस्य अन्तरंग सभा, बाबू जितेन्द्रकुमार आर्य एडवोकेट, सदस्य अन्तरंग सभा, श्री योगेश्वरदयाल आर्य सदस्य अन्तरंग सभा, मास्टर रोहिताशसिंह आर्य सदस्य अन्तरंग सभा श्री सतीश कुमार लेखा परीक्षक नियुक्त किये गये। **-आर. पी. शर्मा मंत्री, मुजफ्फरनगर**

# जीवन की उन्नति के लिए कुछ अनमोल विचार

1. उन्नति की सम्पूर्ण ऊँचाईयों को छूने का सोपान विद्या है।
2. विद्या वही, जो ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि का यथावत ज्ञान करवाये।
3. सफलता प्राप्त करने का सबसे बड़ा साधन समय का सदुपयोग है।
4. शरीर व आत्मा को ठीक रखने के लिए धन नहीं अपितु संयम नियम-सदाचार युक्त मर्यादित रहना जरूरी है।
5. किसी भी श्रेष्ठ कार्य को कल पर छोड़ना उन्नति में सबसे बड़ी बाधा है।
6. किसी भी घर-परिवार-समाज व राष्ट्र के नियमानुसार अनुशासन में रहने से संगठन शक्ति बढ़ती है।
7. सार्वजनिक नियमों का उलंघन करने से समाज व राष्ट्र की बहुत बड़ी हानि होती है।
8. स्वार्थ लालच की जननी है। इससे व्यक्ति का पतन हो जाता है।
9. परमार्थी व्यक्ति स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों को कष्ट नहीं देता।
10. प्राकृतिक ऋण से उऋण होने के लिए प्रत्येक गृहस्थी को दैनिक यज्ञ करना अनिवार्य है।
11. अपने कर्त्तव्य का ठीक-ठीक पालन करना सबसे बड़ा धर्म है।

**-आचार्य रामसुफल शास्त्री ( वैदिक प्रवक्ता ) हाँसी**

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में नशा मुक्त पंजाब का संकल्प

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की शिक्षाओं के प्रचार एवं प्रसार में कार्यरत आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर के तत्वावधान में श्रीराम चौक (कम्पनी बाग) जालन्धर में नशा मुक्त पंजाब का संकल्प लिया गया जिसमें जालन्धर की समस्त आर्य समाजों आर्य समाज, वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर के मंत्री एवं सभा के मंत्री श्री सुदेश कुमार जी, श्री राज कुमार जी प्रधान आर्य समाज, श्री ज्योति जी, आर्य समाज अड्डा होशियारपुर के संरक्षक श्री सोहन लाल जी सेठ, आर्य समाज गांधी नगर-1 के श्री राजपाल जी आर्य, पंडित प्रिंस जी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोषाध्यक्ष श्री सुधीर शर्मा जी, आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट, सभा के उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट, आर्य समाज बस्ती शेख से श्री रमेश भगत जी, आर्य समाज बस्ती दानिशमन्दा से श्री जशपाल, आर्य समाज गढ़ा से श्री बनारसी दास जी, आर्य समाज बस्ती बाबा खेल के प्रधान श्री ओम प्रकाश जी, श्री निर्मल कुमार जी, श्री राजिन्द्र विज

*आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में नशा मुक्त पंजाब का संकल्प कार्यक्रम में भाग लेते हुये जालन्धर के आर्य जन।*

जी, आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर के प्रधान श्री सतपाल जी, श्री वेद आर्य जी, श्री लक्ष्य शर्मा जी, श्री तुषार शर्मा जी, श्री सुनील कुमार शर्मा, श्री सोम नाथ जी जालन्धर विशेष रूप से पधारे। कार्यक्रम में पधारे गणमान्य आर्य नेताओं ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में चल रहे नशा मुक्त पंजाब का संकल्प लिया और पंजाब सरकार के साथ मिल कर कार्य करने का आह्वान किया। उल्लेखनीय है कि समय समय पर आर्य समाज ने कुरीतियों के विरूद्ध जबरदस्त आन्दोलन चलाए हैं। जब जब समाज में कुरीतियां बढ़ती हैं तब तक आर्य समाज इसका विरोध करता रहा है। आर्य समाज में समय समय पर सति प्रथा, बाल विवाह, छूआछूत का विरोध किया और समय समय पर सरकारों को अपने कानून व नियम बनाने पड़े। यह सभी आन्दोलन आर्य समाज के स्वर्णिम समय की उपलब्धियां थी। आज फिर समाज में नशे ने अपने पांव इस सीमा तक पसार लिये हैं कि कई कई घरों में कोई पुरुष सदस्य तक नहीं बचा है। मोहल्ले, गांव, शहर, कस्बे सब नशे की बीमारी की चपेट में बुरी तरह से फंस चुके हैं। कहीं बच्चे मर रहे हैं, कहीं लड़कियां विधवा हो रही हैं, कहीं मां-बाप के बच्चे नशे की चपेट में आकर परिवारों के परिवार विनाश की ओर जा रहे हैं। अब इससे निजात पाने के लिये सारे धार्मिक जगत, राजनीतिक पार्टियां और भी समाज में जितने संगठन हैं एकजुट होकर नशे के विरूद्ध आन्दोलन चलाएं ताकि स्वच्छ समाज का निर्माण किया जा सके।

# आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर का शताब्दी समारोह हर्षोल्लास से मनाया

*आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के शताब्दी समारोह के अवसर पर मंच पर बैठे हुये प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया, स्वामी मधुरानन्दा जी सरस्वती, श्री सत्यपाल जी पथिक, स्वामी सर्वदानन्द जी और श्री रवि शर्मा जी जबकि दूसरे चित्र में आर्य जन हवन यज्ञ करते हुये।*

आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर में एक विशाल कार्यक्रम 30 अप्रैल 2017 दिन रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने की। मुख्यातिथि आर्य जगत के प्रसिद्ध आर्य विद्वान एवं भजनोपदेशक श्री पंडित सत्यपाल पथिक जी थे।

यह शताब्दी समारोह यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ। वैदिक प्रवक्ता पंडित पवन त्रिपाठी जी यज्ञ के ब्रह्मा पद पर सुशोभित रहे। श्रीमती एवं श्री राजेश भाटिया जी, श्रीमती एवं श्री संदीप वाही जी और श्रीमती एवं श्री पंडित तेज नारायण शास्त्री जी यजमानों के रूप में उपस्थित हुये। यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के सत्संग हाल में कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी ने की। मंच का संचालन वेद प्रचार मंत्री डा. पी.के. त्रिपाठी जी ने किया। श्रद्धानन्द महिला महाविद्यालय की छात्राओं एवं शिवानी जी ने अपने मधुर भजनों से सभी का मन मोह लिया। श्री पुरुषोतम शर्मा जी ने विशेष रूप से कार्यक्रम में भाग लिया।

आर्य भजनोपदेशक मधुरम एवं हेमराज आर्य ने कार्यक्रम की शोभा को सुन्दर बना दिया। इस कार्यक्रम में शहर की सभी आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। आर्य समाज नवांकोट के मंत्री पंडित बनारसी दास जी, आर्य समाज लारेंस रोड के प्रधान श्री अरुण महाजन जी, आर्य समाज लक्ष्मणसर के प्रधान श्री इन्द्रपाल आर्य जी ने आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द जी के जीवन पर ओजस्वी वक्तव्य दिया। इस अवसर पर स्वामी मधुरानंदा जी सरस्वती जी ने स्त्री जाति पर ऋषि के उपकारों की चर्चा की। स्वामी सवितानंद सरस्वती बिहार वाले ने देश की उन्नति के लिये युवाओं को आर्य समाज से जुड़ने, जोड़ने का आह्वान किया। पं रविदत्त आर्य जी ने कहा कि बेटियों को आर्य संस्कार दें ताकि बेटी जब बहु बनकर जाए तो दोनों परिवारों में आर्य समाज के संस्कारों से सभी को रंग दे।

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद की स्थापना 28 अप्रैल 1918 को आर्य जगत के वीतराग सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी के कर कमलों हुई। इस आर्य समाज के सबसे पहले श्री जगन्नाथ जी प्रधान एवं कैप्टन केशव चन्द्र जी मंत्री बनाये गये। वेद प्रचार मंत्री डा. पी.के. त्रिपाठी तथा कार्यक्रम के मुख्यातिथि पं. सत्यपाल जी पथिक ने आर्य समाज बाजार श्रद्धानंद अमृतसर के 1918 से 2017 तक के इतिहास पर विस्तारपूर्वक चर्चा की तथा आए हुये सभी आर्यों को भाव विभोर कर दिया। इस शताब्दी समारोह पर आर्य समाज श्रद्धानंद बाजार के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी एवं महामंत्री शशि कोमल और साथियों ने सभी आर्य समाजों एवं स्त्री आर्य समाजों के प्रधान, मंत्री को सम्मानित भी किया।

आर्य समाज लारेंस रोड के प्रधान प्रो. अरुण महाजन, मंत्री दयन शर्मा एवं साथी, ओम प्रकाश दिलावरी, हरीश ओबराय, लाजपत राय खन्ना, रेणु घई, संतोष गोयल, चंचल अग्रवाल, किरण सोंधी, माता जगदीश रानी आर्या, पं. बनारसी दास आर्य, बाल किशन भगत एवं डा. प्रकाश जी प्रधान आर्य समाज नवांकोट, आर्य समाज शक्ति नगर के मंत्री राकेश मेहरा, पदम प्रकाश मेहरा, दिनेश आर्य, आर्य समाज लक्ष्मणसर के प्रधान इन्द्र पाल आर्य, आर्य समाज माडल टाउन के प्रधान श्री इन्द्रजीत ठुकराल, वीरेन्द्र शर्मा, हरिपुरा आर्य समाज के खरैती लाल, आर्य समाज गंडा सिंह वाला, आर्य समाज इन्दिरा कालोनी, आर्य समाज तरनतारन, आर्य समाज मजीठा आदि से बहुत से लोग उपस्थित रहे। अन्त में आये हुये सदस्यों का आर्य समाज के प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया ने धन्यवाद किया।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।